# अजायब बानी

मासिक पत्रिका

मार्च-2025

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

मासिक पत्रिका
# अजायब ✿ बानी
वर्ष–बाइसवां | अंक–ग्यारहवां | मार्च–2025

एक शब्द
## कर लै भजन स्वास
2

सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
## माया परछाई की तरह है
3

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से
## कर्मों का भुगतान
15

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब
## जिन्हें रस आ जाए
21

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से अनमोल वचन
## आदत
30

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039
जिला –श्री गंगानगर (राजस्थान)
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04
संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 उप संपादक : **नन्दनी**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 276 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

# कर लै भजन स्वास

कर लै भजन स्वास मुक जाणगे, छड्डु जावें बंदेया महल बंगले x 2

1 गाफला तूं क्यों नहीं चित में विचार दा, कोई रोज मेला झूठे संसार दा x 2
बाग जो लगाऐ सारे सुक जाणगे,
छड्डु जावें बंदेया....

2 महल अटारियां रहण सुनियां, चलदी गड्डी दे वांग कुल दुनिया x 2
कोठियां शरद खाने जेड़े रंगले,
छड्डु जावें बंदेया....

3 ओह नहीं दिन याद पुट्ठा तूं लटकदा, दुनिया दी हवा लैण नूं भटकदा x 2
जपेंगा जे नाम दूर दुःख जाणगे,
छड्डु जावें बंदेया....

4 खाक में रूलाते योद्धे बलवीर जी, थिर नहीं रहने बादशाह वजीर जी x 2
खाक विच रूल गये अमीर कंगले,
छड्डु जावें बंदेया....

5 उड्डु जुगा भौर मार के उडारी नूं, छड्डु जुगा देही खरी ते प्यारी नूं x 2
जम सेला लेके नेड़े ढुक जाणगे,
छड्डु जावें बंदेया....

6 बीत जुगा वेला फिर पछोतांवेंगा, भैड़ीयां जूनां दे विच कष्ट उठावेंगा x 2
बुरके भरण जीव अंग अंग दे,
छड्डु जावें बंदेया....

7 गाफला तूं करदा गुमान कास नूं, सक्के वीर तेरे फूक आण लाश नूं x 2
सत डंडे खोपड़ी च ठुक जाणगे,
छड्डु जावें बंदेया....

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

DVD-565 (1)

# माया परछाई की तरह है

हुजूर स्वामी जी महाराज की बानी | 23 जून 1992 | कनाडा

दुनिया के सारे समाज इस बात को मानते हैं कि शान्ति भक्ति, नाम और पर्दा खोलकर परमात्मा से मिलने में है। हिन्दु, मुसलमान, सिक्ख या ईसाई सबका भक्ति करने का तरीका एक है। आप किसी पूरे महात्मा से मिलें वे आपको अंदर जाने का साधन और तरीका बताऐंगे। जो महात्मा खुद अंदर जाते हैं वे आपको भी अंदर ले जाऐंगे। करोड़ शान्तियां, करोड़ पहाड़, करोड़ खुशियां और करोड़ खंड–ब्रह्मांड इंसान के अंदर हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि अगर कोई डॉक्टर यह कहे कि मैंने अनेकों ही मुर्दों का चीर–फाड़ किया है लेकिन मुझे कोई खंड–ब्रह्मांड नहीं मिला। प्यारेयो, सब कुछ अंदर है, मन के पर्दे के पीछे है। आप मन का पर्दा उतार दें तो आपकी आत्मा को जिसकी तलाश है वह सब कुछ आपको अंदर ही मिल जाएगा।

मैं बताया करता हूँ कि हमारा शरीर एक टेलिविजन का सेट है, यह उस महान कलाकार परमात्मा ने बनाया है। जहाँ–जहाँ जिसकी जरूरत थी आँख, नाक, मुँह जहाँ कोई रोम बनाना था, सब कुछ परमात्मा ने बहुत ठीक तरीके से लगाया है और वे खुद भी इसके अंदर बैठ गए हैं।

जिस तरह उस टेलिविजन सेट में कलाकार ने सब चीजें फिट की हैं जब टेलिविजन सेट को बैटरी के साथ जोड़ देते हैं तो उसके अंदर साज बजते हैं और आवाजें भी आती हैं। हम उसमें कई किस्म की शक्लें भी देखते हैं अगर कोई यह चाहे कि मैं टेलिविजन में से साजों को निकाल लूं या आवाज करने वाले को पकड़ लूं तो वह सेट को तोड़कर खराब ही

करेगा लेकिन उसमें से कुछ भी नहीं निकलेगा। यह कलाकारों की महान कलाकारी है इसी तरह परमात्मा ने हमारे अंदर सब कुछ रखा हुआ है।

जब हम भी ऐसे महात्मा के पास जाते हैं जिसकी बैटरी परमात्मा के साथ जुड़ी हुई है तो वे हमारी बैटरी भी परमात्मा के साथ जोड़ देते हैं फिर हम भी अंदर चाहे जिस भी मंडल की खबरें सुन सकते हैं। इस जड़ संसार के अंदर न किसी को शान्ति मिली है और न मिल ही सकती है अगर सारी दुनिया की हुकूमत भी मिल जाए फिर भी शान्ति नहीं मिलती और ज्यादा तड़प पैदा हो जाती है। जितना बड़ा सिर होता है उतनी बड़ी पीड़ा होती है।

आपके आगे स्वामी जी महाराज का शब्द रखा जा रहा है, वे कहते हैं कि आप अंदर जाकर 'शब्द–नाम' की भक्ति करके शान्ति प्राप्त करें।

**भजन कर मगन रहो मन में। भजन कर मगन रहो मन में।।**

**जो जो चोर भजन के प्रानी। सो सो दुक्ख सहें।।**

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''जो लोग भक्ति नहीं करते, भजन–अभ्यास नहीं करते वे लोग संसार में दुखी आए और दुख भोगकर ही चले गए, तपते आए और तपते ही चले गए।'' कबीर साहब कहते हैं:

***जो प्रभ कीए भगत ते बाहंज तिन ते सदा डराने रहिए।***

जो परमात्मा के चुनाव में नहीं आए आप उनसे डरते रहें कि कहीं आपके ऊपर भी उनका रंग न चढ़ जाए और आप परमात्मा के चुनाव से अलग न हो जाएं। मन खाली नहीं रहता, यह हमें किसी न किसी तरफ लगाकर रखता है। अगर भजन–अभ्यास नहीं करेंगे तो यह मन हमें लड़ाई–झगड़े की स्कीमें बताएगा, विषय–विकारों में फंसाएगा, हमें बाहरमुखी कर देगा। इसने किसी न किसी तरफ तो दलील देकर ही रखनी है। जिस तरह दीपक की लौ हवा न होने पर भी हिलती रहती है, झंडा भी थोड़ा बहुत हिलता ही रहता है। इसी तरह कछुए के हथियार भी कभी अंदर तो कभी बाहर चलते ही रहते हैं, यही हालत हमारे मन की है।

## आलस नींद सतावे उनको। नित नित भर्म बहें।।

स्वामी जी महाराज अगली तुकों में प्यार से बताते हैं कि जो भजन नहीं करते वे क्या–क्या दुख सहते हैं। वे आलसी हो जाते हैं, एक मिनट भी परमात्मा की तरफ तवज्जो नहीं देते। यह भ्रम है जो हम अपनी आँखों से देखते हैं कि मेरी कौम, मेरा मजहब, मेरा मुल्क और मेरी जायदाद है। हमारा शरीर भी अपना नहीं यह भी किराए का पराया मकान है, इसे यहीं से लिया और यहीं पर छोड़ जाना है।

हम किस चीज का मान करते हैं? **माया परछाई की तरह है** जिस तरह पेड़ की छाया सुबह एक तरफ है और शाम को दूसरी तरफ हो जाती है। जो मुल्क आज तरक्की कर चुके हैं या गरीब हैं, इतिहास बताता है कि वे पहले से गरीब नहीं थे और जो आज अमीर हैं वे पहले से अमीर नहीं थे, यह उतार चढ़ाव तो बना ही रहता है।

हमारा इतिहास बताता है कि शाह सिकंदर ने अपने ज्योतिषियों से पूछा कि मेरी मौत किस तरह आएगी? ज्योतिषियों ने कहा, ''जब आसमान सोने का होगा और धरती लोहे की होगी उस वक्त आपको मौत आएगी।'' सिकंदर ने सोचा कि मैं पैगम्बर हूँ, न आसमान सोने का बने, न धरती लोहे की बने फिर क्यों न मैं दुनिया को जीतकर सारी दुनिया का बादशाह बनूं।

सिकंदर ने हिन्दुस्तान की तरफ अपने कदम बढ़ाए, जब सतलुज का इलाका फतेह करके वापिस जाने लगा तब सिस्तान में उसे मच्छर ने काट लिया, बहुत जबरदस्त मलेरिया बुखार हुआ। वह घोड़े से उतरा तो उसके वजीर ने उसके मुँह पर अपनी सोने की ढाल कर दी और नीचे लोहे की संजो (कवच) बिछा दी, संजो शरीर के बचाव के लिए पहनी जाती है।

जब इंसान की मौत आती है तो अंदर से ही गवाही मिल जाती है कि अब आखिरी वक्त है। सिकंदर ने कहा कि मुझे मेरी माता से मिलवा दें।

हकीमों ने कहा इस समय कुछ भी नहीं हो सकता। सिकंदर ने कहा कि जो मुझे मेरी माता से मिलवा देगा उसे मैं अपना आधा राज्य देने के लिए तैयार हूँ। उन्होंने कहा कि चाहे आप अपना सारा राज्य भी क्यों न दे दें लेकिन एक भी साँस घटाया या बढ़ाया नहीं जा सकता। सिकंदर बहुत रोया पछताया कि जिस जीवन की इतनी कीमत है, पूरा राज्य देने पर भी एक साँस नहीं मिलता लेकिन मैंने अपनी सारी पूँजी मुफ्त में विषय-विकारों और मैं-मेरी में गंवा दी। गुरु साहब कहते हैंः

***माइआ होई नागनी जगति रही लपटाइ।***
***इस की सेवा जो करे तिस ही कउ फिरि खाइ।।***

## काम, क्रोध के धक्के खावें। लोभ नदी में डूब मरें।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि जो भक्ति नहीं करते वे काम के वश होकर अपनी सेहत का सत्यानाश कर लेते हैं या क्रोध का शिकार हो जाते हैं। क्रोधी के माथे का खून जल जाता है, जब क्रोधी के ऊपर क्रोध का हमला हुआ हो तो उस वक्त वह कुछ सोच ही नहीं सकता। जब उसके ऊपर से क्रोध का हमला हट जाता है, तब आप उससे बात करके देखें कि तुमने यह कहा था तो वह बड़े शान्त मन से कहता है कि मैंने तो ऐसा कुछ भी नहीं कहा। कबीर साहब कहते हैं कि क्रोध एक ऐसी अग्नि है जो इंसान के सारे शुभ गुणों को चबा जाती है।

कबीर साहब कहते हैं कि कामी, क्रोधी और लोभी आदमी भक्ति नहीं कर सकता क्योंकि काम और नाम की दुश्मनी है। नाम की चढ़ाई ऊपर की तरफ है और काम की गिरावट नीचे की तरफ है। क्रोध से हमारे ख्याल फैल जाते हैं। सारी बीमारियों की दवाई 'शब्द-नाम' की कमाई भी हमारे अंदर है।

## गुरु संग प्रीत करें नहिं पूरी। नाम न डोर गहें।।

अब आप कहते हैं कि गुरु जब नामदान देते हैं तो 'शब्द रूप' होकर सेवक के तीसरे तिल पर विराजमान हो जाते हैं और उसकी जिम्मेदारी उठाते हैं। जब हम सिमरन के जरिए अपने फैले हुए ख्याल को तीसरे तिल पर इकट्ठा करके एकाग्र होते हैं तो सच्ची प्रीत, सच्चा प्यार पैदा होता है और अंदर का मार्ग किताब की तरह खुल जाता है। इस जगह पर पहुँचकर देखें, प्यार की लपटें जल रही होती हैं।

## तृष्णा अग्नि जलें निस बासर। नर्कन माहिं पड़ें।।

अब आप कहते हैं जो भक्ति नहीं करते अगर वे काम, क्रोध से ऊपर उठते भी हैं तो तृष्णा की अग्नि भड़क उठती है। तृष्णा कर्म को जन्म देती है, कर्म आगे जन्म–मरण का चक्कर चलाता है। हम उस तृष्णा को पूरा करने के लिए जो कर्म करते हैं, उन कर्मों को भोगने के लिए हमें फिर संसार में आना पड़ता है।

## संतन साथ बिरोध बढ़ावें। उलटी बात कहें।।

जो लोग भक्ति नहीं करते वे सन्तों में नुख्स ढूंढते हैं, सतसंग में नहीं जाते। जो बात सन्तों के ख्याल में भी नहीं होती, वे उन पर ऐसा झूठा दोष लगा देते हैं कि हम इसलिए वहां नहीं जाते क्योंकि वहां ये कुछ हो रहा है। बड़ी–बड़ी उच्च कोटि के महात्मा आए लेकिन दुनिया ने उन्हें किसी जगह आराम से सतसंग नहीं करने दिया, नाम का प्रचार नहीं करने दिया।

कबीर साहब को देग में बंद किया गया, जंजीरे बांधकर गंगा में फैंका गया, उनकी गठरी बनाकर हाथी के आगे फैंका गया। इसी तरह गुरु नानकदेव जी को कुराहिया कहा कि इनकी बात न सुनें, ये दिमाग बिगाड़ते हैं। कसूर के इलाके में एक गांव के लोगों ने उन्हें गांव में नहीं आने दिया, उन्होंने बाहर एक कोढ़ी की कुटिया में रात काटी। गुरु अर्जुनदेव जी को अमानवीय तसीहे देकर शहीद किया गया। गुरु गोबिंद सिंह जी का घर–घाट लूट लिया गया, उनके बच्चे नीवों में चिन दिए गए। क्राईस्ट को काँटों

का ताज पहनाया गया, शम्स तबरेज की खाल उतार दी। मंसूर को सूली पर चढ़ाने लगे तो परमात्मा की आवाज हुई, ''अगर तू कहे तो मैं इन्हें गर्क कर दूं।'' मंसूर ने कहा, ''अगर आप मुझ पर दया करना चाहते हैं तो इन्हें मेरी पहचान दे दें कि मैं इनके लिए कितनी प्रार्थना करता हूँ, आप इन्हें माफ कर दें इन्हें पता नहीं कि ये कितनी बुराई कर रहे हैं।''

कई सामाजिक लोगों ने महाराज सावन सिंह जी का बहुत विरोध किया। वे कहा करते थे कि अब लोकतंत्र है जो हम आजाद सतसंग कर रहे हैं, जहां हर एक को बोलने की इजाजत है नहीं तो हम भी बाकी सन्तों की तरह परखे जाते। लोगों ने महाराज सावन सिंह जी के खिलाफ बहुत कुछ लिखा। जब उनसे कहा गया कि आप भी कोई जवाब दें तो महाराज सावन सिंह जी ने कहा, ''सन्तों की चुप ही जीत होती है।''

## सतसंग महिमा मूल न जानें। भेड़ चाल में नित्त पचें।।

जो भक्ति नहीं करते, भजन नहीं करते उन्हें सतसंग की महानता का पता ही नहीं होता कि महात्मा सतसंग किसे कहते हैं। हम आमतौर पर सतसंग उसे कहते हैं जहां सामाजिक लोग इकट्ठे होकर दूसरे समाज की निन्दा करते हैं, जहां गुजरे हुए राजा-महाराजाओं की कथा-कहानियां चलाते हैं। महात्मा के सतसंग के अंदर किसी की निन्दा-चुगली नहीं होती। सतसंग में तो 'शब्द-नाम' का प्रचार होता है, सन्त हमारे अंदर नाम जपने का शौक और तड़प पैदा करते हैं। गुरु साहब कहते हैंः

***मेरे माधउ जी सतसंगति मिले सु तरिआ।।***
***गुर परसादि परम पदु पाइआ सूके कासट हरिआ।।***

सतगुरु महाराज कृपाल सिंह जी कहा करते थे, ''सौ काम छोड़कर सतसंग में जाएं, हजार काम छोड़कर भजन-अभ्यास में बैठ जाएं।''

जन्म-जन्मांतरों के विषय-विकारों का सूखा हुआ मन सतसंग में जाकर हरा हो जाता है। सतसंग में जाकर ही हमें अपनी कमियों और

गलतियों का पता चलता है। जो भक्ति नहीं करते अगर वे भूलकर महात्मा के सतसंग में आ भी जाएं तो फिर

***ओइ वलु छलु करि झति कढदे फिरि जाइ बहहि कूड़िआरा पासि।।***

**धन और मान भोग रस चाहें। रोग सोग में आन फसें।।**
**भाग हीन मत हीन परानी। नर देही बरबाद करें।।**

उनके खोटे भाग्य हैं, वे भाग्य कहां से लाएं? परमात्मा ने उन्हें अपने मिलाप का इंसानी जामें का मौका दिया था, वे इसे बर्बाद करके चले जाते हैं। भक्ति करना, नाम जपना, सतसंग में जाना यह हम किसी के ऊपर कोई एहसान नहीं कर रहे। स्वामी जी महाराज कहते हैंः

***अपने जीव की दया पा लो चौरासी का फेर बचा लो।***

जो अपने ऊपर दया करता है, उस पर परमात्मा भी दया करते हैं।

**ऐसी दशा माहिं नित बरतें। हम क्योंकर समझाय सकें।।**

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि बड़े-बड़े उच्च कोटि के महात्मा आए, वे समझाते हुए ही चले गए। ऐसे लोग जिनके मन बेकाबू हुए फिरते हैं, उनके मन तबदील नहीं हुए क्योंकि वे परमात्मा के चुनाव में नहीं आए।

**साध गुरु का कहा न मानें। मनमत अपनी ठान ठनें।।**

महात्मा आकर नाम का प्रचार करते हैं। वे कहते हैं कि प्यारेयो, परमात्मा ने आपको अमोलक इंसानी जामा अपनी भक्ति के लिए दिया है। आप अंदर जाकर शान्ति प्राप्त करें लेकिन उनके मन बेकाबू होते हैं, वे सुनने के लिए तैयार नहीं होते।

**खर कूकर सम वे नर जानो। बिरथा उदर भरें।।**

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि जिस तरह कुत्ते, बिल्ले, सुअर पेट भरकर सो जाते हैं, उनकी हालत भी ऐसी ही है। उन्हें खोटी-खोटी योनियों में जाना पड़ता है। कबीर साहब कहते हैंः

*पशु घड़ेन्ता नर घड़ा चूक गया सींग पूँछ।*
*अकल वही हैवान की बिना सींग बिन पूँछ।।*

**जमपुर जाय बहुत पछतावें। वहाँ फिर उनकी कौन सुने।।**

अब आप प्यार कहते हैं कि दूत पकड़कर ले जाते हैं, धर्मराज के सामने पेश किया जाता है। वहां बड़ी मुश्किल है, वहां रोता पछताता है। जिस तरह कोई कत्ल करके जज के सामने कहे कि अब बक्श दें। जज कहता है कि ये तो भुगत ले फिर न करना। यही हाल धर्मराज का है, धर्मराज के राज में वहां कौन सुनता है।

**जन्म जन्म चौरासी भोगें। यह शरीर फिर नाहिं धरें।।**

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि चौरासी लाख योनियां भोगने के बाद इंसान का जामा मिलता है। पहले इसे पेड़ों की योनियों में फिर कीड़ों की, फिर पक्षियों की, फिर पशुओं की योनि में जाना पड़ता है। इंसान की योनि की बारी तो बहुत देर बाद आती है।

**दुर्लभ देह मिली यह औसर। ऐसी कर जो बात बने।।**
**सतगुरु सरन पकड़ ले अब की। तौ सब काज सरें।।**

स्वामी जी महाराज ने पहले बहुत प्यार से बताया कि जो भक्ति नहीं करते उनकी क्या हालत होती है। अब आप प्यार से इंसानी जामें की महानता बताते हैं कि इससे किस तरह फायदा उठाना है। परमात्मा ने इंसानी जामा अमोलक हीरा एक अवसर दिया है। इसमें किसी महात्मा के चरणों में जाकर बैठें, वे आपको बताऐंगे किस तरह अंदर परमात्मा की आवाज को सुनना है, किस तरह उनके साथ मिलाप करना है।

**हित का बचन दया कर बोलें। तू नहिं कान सुने।।**

सारी दुनिया अपनी–अपनी गरज से बंधी हुई है। माता–पिता, बहन–भाई सब अपने–अपने मतलब की खातिर एक दूसरे के साथ लगे हुए हैं

अगर कोई इन सबसे ऊपर उठा है और किसी की निस्वार्थ सेवा है तो वह सन्त–सतगुरु की है। गुरु साहब ने भी कहा हैः

***परथाइ साखी महा पुरख बोलदे साझी सगल जहानै।।***

सन्त–सतगुरु जीव के फायदे के लिए ही बोलते हैं।

## अंधा बहरा फिरे जगत में। कुल कुटुम्ब तेरी हान करें।।

स्वामी जी महाराज प्यार से कहते हैं कि हम अंधे भी हैं और बहरे भी हैं। अंधे इसलिए हैं कि परमात्मा ने हमारे अंदर अपना प्रकाश रखा हुआ है लेकिन हम उसे देख नहीं रहे। बहरे इसलिए हैं कि वे दिन–रात आवाज दे रहे हैं कि मेरी तरफ आओ, हम उस आवाज को सुन नहीं रहे। गुरु साहब कहते हैंः

***माइआधारी अति अंना बोला।। सबदु न सुणई बहुत रोल घचोला।।***

## कर सतसंग मान यह कहना। कान आँख फिर दोऊ खुलें।।

आप किसी पूरे महात्मा के पास जाएं, वे आपके बंद कान खोलेगें, आपको आवाज भी सुनाऐंगे और प्रकाश भी दिखाऐंगे। आपके कान और आँखें खुल जाएंगे। गुरु साहब कहते हैंः

***जिस का गृहु तिनि दीआ ताला कुँजी गुर सउपाई।।***
***अनिक उपाव करे नही पावै बिनु सतिगुर सरणाई।।***
***जिन के बंधन काटे सतिगुर तिन साधसंगति लिव लाई।।***
***पंच जना मिलि मंगलु गाइआ हरि नानक भेदु न भाई।।***

## देखे घट में जोत उजाला। सुने गगन में अजब धुनें।।

आप प्यार से कहते हैं कि जब कान और आँख खुल जाएंगे तो आपके अंदर प्रकाश हो जाएगा। आपके अंदर मीठी–प्यारी और सुरीली आवाजें आ रही हैं और आरती हो रही है।

**सुन्न जाय तिरबेनी न्हावे। हीरे मोती लाल चुने।।**
**महासुन्न में सुरत चढ़ावे। तब सतगुरु तेरे संग चलें।।**

जब सिमरन के जरिए फैले ख्याल को नौं द्वारों में से निकाल लेते हैं, अपनी आत्मा के ऊपर से स्थूल, सूक्ष्म और कारन के तीनों पर्दे उतारकर पारब्रह्म में पहुँच जाते हैं, आगे महासुन्न का देश है। पारब्रह्म में पहुँची हुई आत्मा का बारह सूरज जितना प्रकाश हो जाता है लेकिन यह महासुन्न के अंधेरे को अपने आप पार नहीं कर सकती, वहां गुरु की जरूरत पड़ती है। हिन्दू शास्त्रों में बहुत जोरदार लफ्जों में लिखा है कि वह गुरु है जो अंधेरे में प्रकाश कर दे, वहां गुरु साथ होकर ही आत्मा को आगे लेकर जाते हैं। गुरु अंगददेव जी महाराज भी कहते हैंः

***जे सउ चंदा उगवहि सूरज चड़हि हजार।।***
***एते चानण होदिआँ गुर बिनु घोर अंधार।।***

जो ऋषि-मुनि पूरे गुरु के साथ के बिना अंदर जाने की कोशिश करते हैं वे इस भूल-भुल्लैया में जाकर अटक गए अगर किसी सतसंगी की आत्मा अंदर जाती है तो वे कहते हैं कि आप अपने गुरुदेव के आगे विनती करें कि वे हमें भी ले जाएं।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि जब पारब्रह्म में महासुन्न के अंधेरे को पार करोगे तो सतगुरु आपके साथ होंगे, सतगुरु के प्रकाश से ही आपकी आत्मा पार हो सकती है।

**भँवरगुफा की बंसी बाजी। महाकाल भी सीस धुने।।**
**अब चढ़ गई पुरुष दरबारा। वहाँ जाय धुन बीन गुने।।**

अब स्वामी जी महाराज कहते हैं कि जब आत्मा भँवरगुफा से ऊपर जाती है तो महाकाल सिर फेर देता है कि अब यह आत्मा मेरे वश में नहीं रही। आगे सतगुरु की ड्यूटी होती है, सतगुरु जब नाम देते हैं तो सच्चखंड

में डोरी बाँध देते हैं। आगे सतनाम अपनी मदद देकर अलख, अगम और अनामी में भेजते हैं। यहाँ पहुँचे सारे ही महात्मा अपनी बानियों में जिक्र करते हैं कि वहाँ शब्द की आवाज बीन की तरह मीठी है। वहां सब सन्त चुप हैं, वह जगह शान्त है। जो वहां जाता है वह शान्त हो जाता है। कौन आकर उसे ब्यान कर सकता है।

कबीर साहब कहते हैं कि जिस तरह नमक की पुतली समुंद्र का थाह लेने जाती है लेकिन वह पानी में मिलकर पानी हो जाती है। सन्त भी आकर इशारों के मुताबिक उस जगह का जिक्र करते हैं और यह भी कहते हैं कि आप हमारे साथ चलकर खुद अपनी आँखों से इस सच्चाई को देखें। दुनिया की कोई भी चीज मेहनत के बगैर प्राप्त नहीं होती। सोना खान खोदकर निकाला जाता है, माता बिना पीड़ा के बच्चे को जन्म नहीं दे सकती। रूहानियत की दौलत भी हम मेहनत करके ही प्राप्त कर सकते हैं।

दुनिया में हमारा कोई दुश्मन नहीं, हमारा दुश्मन हमारा मन है। हम सब एक ही पिता के पुत्र हैं, आपस में सब भाई–बहन हैं लेकिन हमारा दुश्मन मन हमारे अंदर बैठा है, यह बड़ा हठीला है। तुलसी साहब कहते हैं:

***तुलसी रण में जूझना घड़ी एक का काम, नित उठ मन से जूझना बिन खंडे संग्राम।***

रण में लड़ना एक घड़ी का काम है, मर जाना या मार देना लेकिन मन के साथ बिना खंडे संग्राम है, सतसंगी को नित उठकर जूझना पड़ता है।

**ले दुरबीन चली आगे को। अलख अगम का भेद भने।।**
**यहाँ से आगे चली उमंग से। तब राधास्वामी चरन मिलें।।**
**मिला अधार पार घर पाया। लीला वहाँ की कहे ने बने।।**

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

# कर्मों का भुगतान

21 मई 1988 | DVD- 541 (5) | अमेरिका

***धन दारा सुत लक्ष्मी पापी दे भी होय।***
***सन्त समागम हरि कथा तुलसी दुर्लभ लोय।।***

सन्त–महात्माओं की विद्या न रोचक होती है और न ही भयानक होती है, उनकी विद्या यथार्थ होती है। वे हमें न नर्कों से डराते हैं और न स्वर्गों का लालच ही देते हैं। वे हमें प्यार से बताते हैं कि देखो प्यारेयो, आप जो कर्म करते हैं वे आपको खुद ही भोगने पड़ेंगे।

हम जिस युग में आए हैं हमें उस युग का धर्म पढ़ना पढ़ेगा कि इसमें किस तरह मुक्ति है, किस शक्ति से मुक्ति है? वह नाम की कमाई है। औरत कर्म करे तो औरत को भोगना पड़ेगा, पति कर्म करे तो पति को भोगना पड़ेगा। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

***जो बीजै सो उगवै खाँदा जाणै जीउ।।***

प्यारेयो, हम आँखों से देखकर भी सच्चाई को नहीं मानते फिर भी हम कहते हैं कि हम इन चीजों में विश्वास नहीं करते। आप जब अंदर के स्वर्ग और नर्क देखेंगे तो आपको पता चलेगा लेकिन आप इस संसार में भी नर्क और स्वर्ग देख सकते हैं। वे भी इंसान हैं जिनकी अच्छी सेहत है, वे धनी हैं और उनके पास हर किस्म की सहूलियत है। वे भी इंसान हैं जो चल नहीं सकते, दिमाग से अच्छी बात नहीं कर सकते, गरीबी से जूझते हैं और उन्हें कई मुसीबतें भी हैं।

मुझे हर किस्म के आदमी से मिलने का मौका मिलता है, सब्र से ही टाईम पास करना पड़ता है। यह अपने कर्मों का ही नतीजा होता है कि बुरे कर्मों की सजा बीमारी, बेरोजगारी होती है। अच्छे कर्मों का इनाम तंदरूस्ती, धनी और अच्छा दिमाग होता है।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''काल के राज्य में न्याय है और दयाल के राज्य में बख्शिश है। जो करता है उसे ही उसका बदला चुकाना पड़ता है।'' मुसलमानों की पवित्र किताब में लिखा है जो किसी की गर्दन काटता है, उसकी गर्दन काटी जाती है। जो किसी की टाँग काटता है, उसे टाँग का बदला चुकाना पड़ता है। आँख निकालने वाले को आँख का ही बदला चुकाना पड़ता है। जो जैसा कर्म करता है उसके अनुसार उसका अंग-भंग होता है।

जिन महात्माओं की आँखें खुली हैं वे हमें बताते हैं कि दुनिया की रचना करने वाली कोई शक्ति है, उसने रचना करके इसे बे-लगाम नहीं छोड़ा हुआ, वह इसकी संभाल भी करता है और रखवाली भी करता है। हर मुल्क की अपनी-अपनी सरकार होती है, उस सरकार ने अपने मुल्क में हर प्रकार के महकमें बनाए होते हैं। हर एक को उसकी योग्यता के अनुसार अधिकार दिया होता है इसी तरह काल ने **कर्मों का भुगतान** करने के लिए धर्मराज को मुकर्रर किया हुआ है। धर्मराज की किसी के साथ कोई दुश्मनी या प्यार नहीं। धर्मराज ने दो ताकतें पैदा की हैं जिसे चित्र और गुप्त कहते हैं। एक देवता रात का हिसाब रखता है और दूसरा देवता दिन का हिसाब रखता है। एक दाईं तरफ और दूसरा बाईं तरफ है।

जो 'शब्द-नाम' की कमाई करते हैं, गुरु की शरण में चले जाते हैं उनका हिसाब गुरु के पास होता है। चित्र और गुप्त उनकी तरफ आँख उठाकर भी नहीं देख सकते। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''काल का हिसाब-किताब हर किसी को देना पड़ता है। काल एक रत्ती भर रियायत नहीं करता चाहे गुरु सेवक का हिसाब चुकाए या सेवक हिसाब चुकाए लेकिन हिसाब जरूर चुकाना पड़ता है।''

धर्मराज स्वतंत्र है, वह चाहे तो हमारे बुरे कर्मों का फल तुरंत भी दे सकता है। चाहे दूसरे, तीसरे, चौथे या सौ जन्म से ऊपर भी दे सकता है,

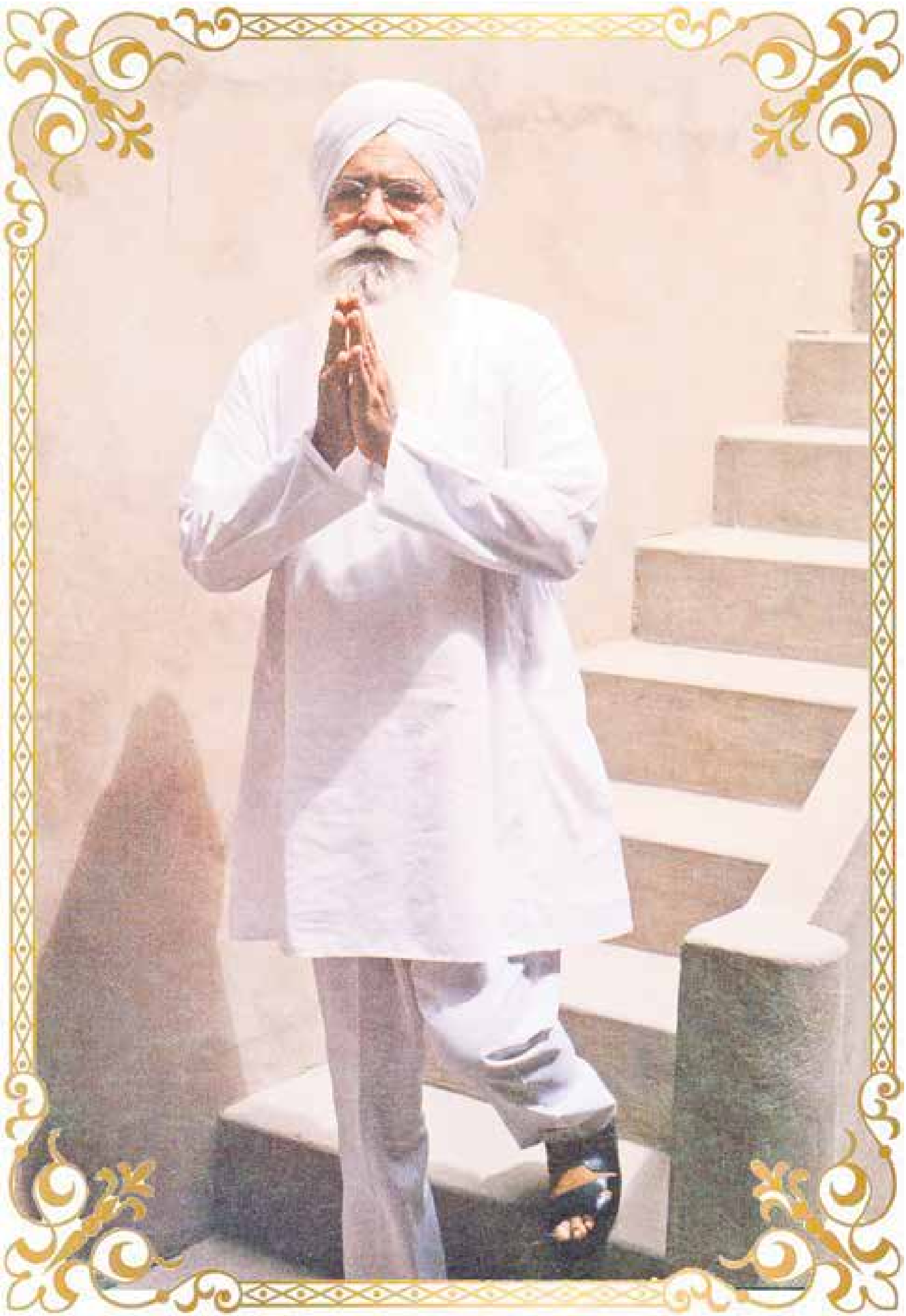

अच्छे कर्मों का इनाम तुरंत भी दे सकता है अगर वह चाहे तो किसी और जन्म में भी दे सकता है। बड़े–बड़े कमाई वाले ऋषि–मुनि हुए हैं जिन्हें कई जन्मों का ज्ञान था लेकिन **कर्मों का भुगतान** करते समय वे भी रो उठे, पुकार उठे।

मांडव ऋषि जंगल में तपस्या कर रहा था। उसने बहुत तपस्या की, वह अपनी समाधि में बैठा था। चोर किसी राजा के महल में चोरी करके आए, उन्हें ख्याल आया कि यह जंगल में बैठा है, इसे खर्चे की तंगी होगी। चोरों ने एक मोतियों की माला उस ऋषि के आगे रख दी। चोरों के पीछे पुलिस भी आ रही थी, जिसके पास माल मिले वही चोर होता है। पुलिस ने ऋषि को समाधि में से उठाकर पूछा कि तू यह बता कि माला कहाँ से ली है? ऋषि ने वे चोर नहीं देखे थे। पुलिस वालों ने ऋषि को राजा के सामने पेश कर दिया। उस समय सजाएं बहुत सख्त होती थी, राजा ने कहा कि इसे फाँसी लगा दें। जब फाँसी लगाने लगे तो ऋषि से पूछा गया कि तुमने किसी से मिलना है, कुछ करना है तो कर लो। ऋषि ने कहा कि मुझे दो चार मिनट आँख बंद करके बैठने दें। उन्होंने कहा कि ठीक है।

ऋषि की धर्मराज तक पहुँच थी, ऋषि ने धर्मराज से पूछा कि मुझे किस कर्म का दण्ड मिलने लगा है, मैं निर्दोष हूँ और मुझे फाँसी दी जा रही है। मुझे सौ जन्मों का पूरा ज्ञान है कि मैंने सौ जन्मों में ऐसा कोई कर्म नहीं किया कि मुझ निर्दोष को फाँसी पर चढ़ाया जाए। धर्मराज ने कहा कि तुम्हारी बात तो सही है, मैं भी जानता हूँ लेकिन तुम इससे पीछे देखो।

जब ऋषि ने इससे पिछला जन्म देखा जिसमें वह एक टिड्डे की टाँगे बांधकर उसे मार रहा था। धर्मराज ने कहा कि इसका बदला तुझे चुकाना पड़ रहा है क्योंकि इस संसार में जितना एक इंसान को जीने का हक है उतना ही एक पशु पक्षी को भी जीने का हक है। मौत का फैसला मौत का देवता ही कर सकता है। किसी को यह अधिकार नहीं कि वह किसी की

मौत का फैसला अपने हाथ में ले। दूसरी तरफ अगर हम 'शब्द–नाम' की कमाई करते हैं तो बुरे कर्मों का प्रभाव बहुत जल्द ही खत्म हो जाता है।

कबीर साहब की एक नामलेवा औरत का नाम कीड़ी था, वह बहुत गरीबी में जूझ रही थी। वह लोगों के घरों में सफाई करके झाड़ू लगाकर दुख में जीवन बिता रही थी। उसका एक लड़का था, वह किसी के पशुओं को चराता था। वहां राजा हरिचर का राज्य था, राजा वहां से गुजर रहा था राजा के साथ गणित विद्या जानने वाले ज्योतिषी भी थे। जब उन्होंने उस लड़के को पशु चराते हुए देखा तो सोचा कि लड़का बहुत गरीबी में जीवन बिता रहा है लेकिन इसका संजोग इस राजा की लड़की के साथ है।

ज्योतिषी कुदरत का खेल देखकर हँसे और रोए। राजा ने उनके रोने और हँसने का कारण पूछा तो उन्होंने कहा कि बादशाह सलामत अगर हम सच्चाई बताएंगे तो आप हमारी गर्दनें काट देंगे अगर नहीं बताते आप फिर भी हमें मजबूर करेंगे कि बताते क्यों नहीं? यह जो लड़का पशु चरा रहा है, गरीबी की हालत में है। इसका संजोग आपकी राजकुमारी के साथ है।

राजा ने सोचा कि मेरी बहुत बदनामी होगी, लोग कहेंगे कि राजा का दामाद बहुत गरीब है। राजा ने विचार किया कि इसे मरवाया जाए फिर विचार किया कि इसे किस तरीके से मरवाया जाए। फिर राजा ने कहा कि इसके जिम्मे टैक्स की चोरी लगाई जाए। जब यह आएगा तो इसे फाँसी पर लटका देंगे। उस लड़के के साथ ऐसा ही किया गया कि तू सरकार का चोर है, तूने टैक्स नहीं दिया, तीन लाल अदा कर।

जब उस लड़के की माँ कीड़ी को पता चला कि मेरे लड़के की यह हालत है तो उसने कहा कि हम तो भूख और गरीबी से जूझ रहे हैं, हमारे पास देने के लिए लाल कहां से आएगा? जब हम गरीबों की कोई आमदनी ही नहीं है तो हम पर टैक्स किस बात का? वह औरत कबीर साहब की नामलेवा थी, वह सारी रात कबीर साहब की याद में बैठी रही। उसने नाम

की कमाई की, पुकार की, अरदास की। वह जिस जगह अभ्यास के लिए बैठी थी, वह कमरा लालों से भर गया। उसने सुबह राजा को कहलवा भेजा कि राजा आकर जितने चाहे लाल ले जाएं, हमें इन लालों की जरूरत नहीं क्योंकि नामवाले में संतोष होता है, नाम की वजह से संतोष आ जाता है।

राजा बहुत परेशान हुआ कि मैं क्या सोचता था और हो क्या गया। जब वहां जाकर उसने देखा तो लालों की कोई गिनती नहीं थी। उस औरत ने राजा से कहा कि तू अपने आदमियों से इन लालों को उठवाकर ले जा। हमें इन लालों की जरूरत नहीं है। हमारे पास नाम है जो इन लालों से कीमती है। राजा ने अपनी लड़की की शादी उस कीड़ी के लड़के के साथ की और वह भी नामलेवा बना। गुरु नानकदेव जी ने जपजी साहब में लिखा हैः

***कीड़ी तुलि न होवनी जे तिसु मनहु न वीसरहि।।***

नाम के बगैर जीव बेसहारा और बेआसरा है। नाम सहारा होता है, जिस तरह अंधा छड़ी पकड़कर चलता है। पिछले कर्म भोगने के लिए हम बेबस हैं, चाहे रोएं चाहे कुरलाएं हमें भोगने ही पड़ते हैं लेकिन आगे के लिए अच्छे या बुरे कर्म कमाने के लिए हम स्वतंत्र हैं। इस जामें में बैठकर हम नाम की कमाई कर सकते हैं जिससे अच्छे या बुरे कर्म करने की इच्छा ही नहीं उठती। स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''अगर आपने कर्मों का हिसाब आसान करना है तो किसी पूरे महात्मा के पास जाकर नामदान प्राप्त करें, नाम की कमाई करें।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

***नामु विसारि चलहि अन मारगि अंत कालि पछुताही।।***

हम 'शब्द–नाम' की कमाई छोड़कर जिस भी रास्ते पर चलेंगे तो आखिरी वक्त पछताने के सिवाय हमारे पल्ले कुछ भी नहीं पड़ेगा।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

# जिन्हें रस आ जाए

2 नवम्बर 1984 | 16 पी.एस.आश्रम, राजस्थान

***एक प्रेमी:*** *महाराज कृपाल सिंह जी डेरा ब्यास में एक बहुत ही महत्वपूर्ण व्यक्ति थे, आप जब महाराज सावन सिंह जी के जीवन काल के दौरान वहाँ जाया करते थे तो क्या आपने कभी उन्हें वहाँ देखा था?*

**बाबा जी:** शायद देखा हो लेकिन कभी बातचीत नहीं हुई। जब संगत में जाते थे तो जरूर देखा होगा लेकिन हमारी कभी मुलाक़ात नहीं हुई कि उन्होंने मुझसे कहा हो कि मैं कृपाल सिंह हूँ या मैंने उनसे कहा हो कि मैं अजायब सिंह हूँ। बाबा सोमनाथ जी से मेरी मुलाक़ात भी महाराज सावन सिंह जी ने ही करवाई थी।

***एक प्रेमी:*** *हमारा चार साल का लड़का हमारे साथ बैठकर अभ्यास करना चाहता है, वह जब बैठता है तो कहता है कि उसे अंदर बहुत बड़े-बड़े साँप और जानवर वगैरह दिखाई देते हैं। क्या यह उसके मन की कल्पना है या वास्तव में ही उसे वे चीजें नजर आती हैं? जब तक बच्चों को धुन और नामदान प्राप्त नहीं हो जाता तो क्या तब तक उन्हें इंतजार करना चाहिए या वे अभ्यास में बैठ सकते हैं?*

**बाबा जी:** बच्चे को हमेशा गुरु के बारे में बताना चाहिए, गुरु का प्यार और हमदर्दी बतानी चाहिए फिर ऐसा नहीं होगा। हो सकता है कि वही बच्चा आपको यह बताए कि गुरुदेव मेरे पास बैठे हैं और मेरे साथ बातें कर रहे हैं क्योंकि कई बार सतसंगियों का अंदर कनेक्शन नहीं जुड़ता लेकिन ये भोले-भाले बच्चे अंदर गुरु के साथ कनेक्शन जोड़ लेते हैं।

मैंने खूनी चक्क में एक बच्चा पाला था जिसका नाम गोपीचन्द था। जिस तरह मैं यहाँ ऊपर चौबारे में रहता हूँ, वहाँ भी इसी तरह रहता

था। गोपीचन्द छोटा बच्चा था, उसे नीचे पेशाब करने के लिए आने में डर लगता था। बच्चे आमतौर पर अंधेरी रात में डर जाते हैं, उस समय बिजली का कोई प्रबन्ध नहीं था। मैं रोज उसके साथ महाराज कृपाल सिंह जी की बातें किया करता था कि गुरु बड़े हमदर्द होते हैं, गुरु का प्यार सच्चा होता है, गुरु किसी भूत–प्रेत को नजदीक नहीं आने देते अगर तुम गुरु को याद करोगे तो कोई भी चीज़ तुम्हारे ऊपर हमला नहीं कर सकेगी।

उसके दिल में प्यार था। आमतौर पर जैसे हम बैठते थे, वह भी उसी तरह बैठ जाता था। वह रात को कई बार अच्छे–अच्छे सपने बताया करता था। बरसात के पानी की निकासी के लिए छत पर एक नाली थी। एक दिन गोपीचन्द ने कहा कि रात को महाराज जी आए थे और उन्होंने मुझसे कहा, ''गोपीचन्द, नीचे पेशाब करने के लिए न जाया करो, यहीं नाली में कर लिया करो।'' जब वह यह कह रहा था कि मुझे महाराज जी ने यह बात कही है तो मैं उसे ऐसा करने से कैसे मना कर सकता था। वह वहाँ रोज पेशाब करने लगा।

कुछ दिन बाद महाराज जी आए। उस जगह से थोड़ा आगे एक शौचालय था, महाराज जी वहाँ पेशाब करने के लिए गए तो उस नाली से पेशाब की बदबू आ रही थी। महाराज जी ने पूछा कि यहाँ पेशाब कौन करता है? मैंने कहा कि जिसे आपने हुक्म दिया था। जब महाराज जी को सारी कहानी बताई तो महाराज जी गोपीचन्द को अपनी गोद में लेकर बहुत खुश हुए। आज कल वह बच्चा बड़ा हो गया है। जब वह शादी करवाकर यहाँ आया तो मैंने उसे बचपन की कहानी बताई। आत्म और ओबरॉय साहब दोनों को बताया कि यह वह बच्चा है जिसे बचपन में महाराज जी ने कहा था कि तुम यहाँ पेशाब कर लिया करो।

बच्चों को घर में गुरु प्यार और गुरु हमदर्दी की बातें जरूर बतानी चाहिए ताकि बच्चों पर अच्छा असर पड़े। अगर बच्चे पर कोई वक्त आता

है कि वह रात–बेरात ड्यूटी पर जाता है तो वह गुरु को याद करे और गुरु उसकी मदद कर सकें। मैं भरोसे से कहता हूँ कि गुरु कभी भी आपके बच्चे को अकेला नहीं छोड़ेंगे। जहां कोई मदद नहीं कर सकता वहाँ गुरु जरूर मदद करेंगे।

संगराना का एक लड़का किसी काम से 77आर.बी. चला गया, वहाँ उसे रात हो गई। अगर वह बच्चा वापिस अपने गाँव की तरफ चले तो उसे डर लगे क्योंकि वहाँ से उसके गाँव का फासला दो मील था अगर वहीं रुके तो उसे अपने घरवालों से डर लगे। उस दिन हमने 77आर.बी. का आश्रम छोड़कर **16** पी.एस. आना था। हमने कार में आना था बाकी सारा सामान हम पहले ही ले आए थे।

वह लड़का वहाँ से घबराया हुआ चल पड़ा, जब उसने कार आती हुई देखी तो उसके डर की कोई हद न रही कि पता नहीं किस चीज़ की लाइट आ रही है, यह लाइट अब मुझे नहीं छोड़ेगी। उसे पता नहीं था कि बाबा जी की कार आ रही है, उस समय परम पिता कृपाल ने उस बच्चे की रक्षा की। परम पिता कृपाल ने एक बुजुर्ग का रूप धारण करके उस बच्चे को प्यार दिया और कहा, ''बेटा, कोई बात नहीं, मैं तुम्हारे पास ही हूँ। तुम डरो मत, मैं तुम्हें इस कार में बैठा दूँगा।''

जब हमारी कार उनके पास से गुजरने लगी तो महाराज जी ने हाथ दिया, उसे कार में बैठाया और हमने उस बच्चे को संगराना उतार दिया। वह रास्ते में पिछली सीट पर बैठा था, मैं उस लड़के से बातें करता रहा। मैंने उससे कहा कि क्या तुमने इस बुजुर्ग को पहचाना कि ये कौन थे? उस लड़के ने कहा कि मुझे तो पता नहीं, जब मैं ज्यादा डर गया था तब मुझे वहीं बैठे दिखे। मैं चुप रहा क्योंकि मैं इस राज़ को समझता था कि यह परम पिता कृपाल की ही दया है। उस परिवार को नाम तो नहीं मिला था लेकिन वह परिवार सतसंग में आया करता था।

77 आर.बी. में महाराज कृपाल ने कई भूले आदमियों को रास्ता बताया कि मैं कहाँ बैठा हूँ, आप गुरु को क्या समझते हैं? वे बड़े दयालु और हमदर्द होते हैं। उन्हें हमारा और हमारे बच्चों का फिक्र होता है लेकिन हम माता–पिता में यह कमी है कि हम बच्चों के दिल में गुरु का प्यार–मोहब्बत और हमदर्दी नहीं जगाते।

गुरु बच्चों की तो क्या हर सतसंगी की अपनी जान से भी ज्यादा रक्षा करते हैं। वे अपनी जान को खतरे में डालकर भी सतसंगी की मदद करते हैं। यह अब अपनी–अपनी समझ है कि वे किस रूप में आकर हमारी मदद करते हैं क्योंकि वह उस तरह का रूप नहीं होता। गुरु ने जिस रूप में मदद करनी होती है वे उस किस्म का रूप धारण करते हैं, वे किसी इंसान में बैठकर भी मदद करते हैं।

बग्गा परिवार पहले कभी कनाडा नहीं गया था, जब वे कनाडा जाने लगे तो लोगों ने उनसे कई किस्म की बातें की कि वहाँ इमिग्रेशन वाले आपसे यह पूछेंगे, आप फलां जगह से हवाई जहाज कैसे बदलेंगे? उनके दिल में ख्याल था कि यह सब कैसे होगा। जब कोई सफर न किया हो और बंदा रास्ते का वाकिफ न हो तो अमूमन दिल में ऐसी बातें और ख्याल उठने शुरू हो जाते हैं।

हीरा लाल को बहुत भरोसा था। जिस तरह परम पिता कृपाल ने उनकी रक्षा की, उसने कनाडा पहुँचते ही एक टेप भेजी कि आप कहते जरूर हैं कि सन्त करामात नहीं दिखाते लेकिन मैंने आँखों से देखा है कि किस तरह गुरु ने मेरी रक्षा की, संभाल की। मैं कैसे मानूँ कि सन्त करामात नहीं दिखाते। जिन्हें भरोसा होता है, गुरु उनके सब काम करते हैं। हीरा लाल को गुरु पर भरोसा था, वह सारे सफर में अपने गुरु की दया देखता रहा कि किस तरह गुरु ने दया की। उस टेप में उसकी मेन बात यही थी कि आप कहते हैं कि सन्त करामात नहीं दिखाते लेकिन

मैं मान ही नहीं सकता, मैं यह कहता हूँ कि करामात के बिना सन्तों के पास कोई बात ही नहीं है।

सन्त अपनी बड़ाई खुद नहीं करते, वे कहते हैं कि सब कुछ हमारे गुरु की दया है, यह सब कुछ हमारे गुरु का ही है, वे अपने गुरु को ही क्रेडिट देते हैं। मैं आशा करता हूँ कि जिनके बच्चे हैं, वे जरूर अपने बच्चों को गुरु का प्यार और गुरु की हमदर्दी सिखाएंगे।

***एक प्रेमी**: हम आपके बच्चे हैं, क्या आप हमें महाराज कृपाल के प्यार के बारे में कोई कहानी सुनाएँगे?*

**बाबाजी:** मैं आशा करता हूँ कि आप सन्त बानी मैगजीन पढ़ें। मेरा ख्याल है कि मैगजीन में परम पिता कृपाल की ही कहानियाँ आती हैं कि वे क्या थे और उन्होंने किस तरह दया की।

मैं आपको जो कुछ भी सुनाता हूँ, परम पिता कृपाल की कहानियाँ ही सुनाता हूँ। ये जो भजन लिखे गए हैं, ये सब कृपाल की कहानियाँ ही हैं। इनमें ज्यादा से ज्यादा अपने गुरु की महिमा बताने की कोशिश की गई है। गुरु और परमात्मा एक हैं बेशक सन्तों ने बड़े–बड़े ग्रंथ लिखे हैं लेकिन उनकी महिमा लिखने, पढ़ने और बोलने में नहीं आती क्योंकि यह अनुभव

की चीज़ है, अंदर जाकर ही पता चलता है कि गुरु क्या हैं? इन भजनों में ज्यादा से ज्यादा यही बताने की कोशिश की गई है कि इस गरीब आत्मा पर परम पिता कृपाल ने जो दया और मेहरबानी की है, उसकी महिमा गाई नहीं जा सकती।

मैंने उनके आगे अपने आपको ज्यादा से ज्यादा गुनाहगार और गरीब साबित किया है और यही कहा कि मैं दुखी हूँ। आप मेरे दुखों की दवाई हैं, आप तरस खाकर इस दुखिए को पार करें, यह आपके सहारे बैठा है, नित आपका विछोड़ा सता रहा है, आपका विछोड़ा मारे जा रहा है।

वे परमात्मा, वे राम, वे परम सन्त पूर्ण धनी कामिल फकीर के हुक्म में थे, उनके वश में थे। उन्होंने इस गरीब आत्मा पर दया करके इसके अंदर अपना बना बनाया और अपने वश वाला भगवान रख दिया। वे इस गरीब आत्मा पर पूरा भरोसा करते थे इसलिए मैं दिन–रात, सोते–जागते उनकी कहानियाँ सुनाता हूँ। पैरों से लेकर सिर तक पूरा जिस्म ही उनकी कहानियों से भरा पड़ा है फिर भी ये खत्म होने में नहीं आ सकती।

जब आप लोग इन भजनों को अच्छी तरह समझ लेंगे तो आपके अंदर गुरु प्यार इस तरह जाग जाएगा जिसकी आप आशा भी नहीं कर सकते क्योंकि ये भजन गुरु प्यार और नम्रता से भरे हुए हैं। महाराज परम पिता कृपाल कहा करते थे, ''नम्रता धारण करें, परमात्मा को नम्रता प्यारी है।'' यह सच है कि जब हम अंदर जाते हैं और गुरु को ऊपर के मंडलों में देखते हैं, तब हमें पता चलता है कि वे भगवान रूप हैं और भगवान से भी ऊंचा दर्जा रखते हैं।

आप कहेंगे कि भगवान सबसे बड़े हैं बेशक भगवान बड़े हैं लेकिन गुरु भी भगवान का हुक्म मानकर आए होते हैं, उन्होंने भगवान को अपने वश में किया होता है। नामदेव जी ने कहा है, ''अगर भगवान किसी को बांध दें तो मैं प्यार से उसे छुड़वा सकता हूँ क्योंकि वे प्यारे पिता होते हैं, उन्हें

भक्तों ने प्यार की जंजीरों से बांधा होता है इसलिए वे छोड़ देते हैं। अगर भक्त परमात्मा को प्यार से बांध दें तो परमात्मा उनसे पूछ नहीं सकते कि मुझे किस अपराध में बांधा है क्योंकि भगवान भक्तों के वश में होते हैं।''

***एक प्रेमी:*** *जब हमें नामदान प्राप्त होता है तो गुरु हमारे पिछले सारे कर्मों को खत्म कर देते हैं। इसी तरह जब हम यहाँ आपके पास आकर दस दिन बिताते हैं तो इन दस दिनों का हमारी आत्मा पर क्या असर होता है?*

**बाबा जी:** यह भी एक समझने वाली बात है। कबीर साहब कहते हैं:

***इन्द्र की एक घड़ी, कुंआ बारह मास।***
***सतसंग की एक घड़ी, सिमरन बरस पचास।***

अगर कुआँ बारह महीने भी चलता रहे तब भी वह इतना पानी निकालकर दुनिया का फायदा नहीं कर सकता जितना कि इन्द्र देवता एक घड़ी बारिश करके फायदा कर सकता है। हम घर बैठकर पचास साल भी सिमरन कर लें तो भी वह सतसंग की एक घड़ी के बराबर नहीं आ सकता। एक सेकंड भी किसी जीवित महापुरुष की सोहबत हमारे घर बैठकर किए सिमरन से बड़ा दर्जा रखती है।

***कबीर साधू कउ मिलने जाईऐ साथि न लीजै कोइ।।***
***पाछै पाउ न दीजीऐ आगै होइ सु होइ।।***
***कबीर संत की गैल न छोडीऐ मारगि लागा जाउ।।***
***पेखत ही पुँनीत होइ भेटत जपीऐ नाउ।।***

जिन्हें जीवित महापुरुष के सतसंग का रस आ गया, वे कहते हैं कि हमारा जो भी काम बना है, वह पढ़-पढ़ाई से नहीं बना। मुझे चार वेद जुबानी याद हैं लेकिन मेरा जो काम हुआ है, वह गुरु की संगत और सोहबत की ही देन है। कबीर साहब को दुनिया का बहुत नॉलेज था।

***एक घड़ी आधी घड़ी आधी हूँ से आध।।***
***कबीर संगति साध की कटै कोटि अपराध।।***

गुरु साहब कहते हैं:

***बिनु साधू जो जीवना तेतो बिरथारी ।।***

गुरु के दर्शनों से पाप कट जाते हैं, उनके मुंह से मीठी जुबान सुनने के अपने ही फायदे हैं क्योंकि उन्होंने हमें हमारे फायदे के लिए ही समझाना है। वे हमारे दिल को ठंडक देते हैं, एक बार हमारे पाप धो देते हैं। जब इसका मूल्य मिलता है तो पता चलता है कि यह संगत इतनी अच्छी थी तो मैंने सारी जिंदगी क्यों नहीं की।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''परमात्मा बेइंसाफ नहीं अगर हमारा धन गलत तरफ लगता है तो पाप की गिनती में गिना जाएगा अगर अच्छी तरफ लगता है तो वह शुभ कर्मों में गिना जाएगा। बुरी संगत का बुरा असर होता है तो अच्छी संगत का अच्छा असर होता है।''

मैं हर प्रेमी को बताया करता हूं कि परमात्मा ने खास दया करके आपको इस पवित्र यात्रा का मौका दिया है, आप इस यात्रा से फायदा उठाएँ। मैं यह भी कहा करता हूं कि आप इस पवित्र यात्रा को न भूलें, इस यात्रा में आप उससे मिलते हैं जो आपका हमदर्द है।

सतसंग हमारे भजन की बाड़ होती है अगर हम किसी जीवित महापुरुष के सतसंग में नहीं जाएंगे तो हमें पता ही नहीं चलेगा कि हम गलत कर रहे हैं या सही कर रहे हैं। गुरु साहब कहते हैं:

***महिमा साधू संग की सुनहु मेरे मीता।।***
***मैलु खोई कोटि अघ हरे निरमल भए चीता।।***

एक बार मैंने सन्त बानी आश्रम में कबीर साहब की बानी पर सतसंग दिया था। उसमें उन्होंने साधू के एक मिनट के दर्शन से लेकर एक साल तक का बताया। वे कहते हैं, ''अगर कोई एक साल तक साधू के दर्शन नहीं करता तो उसका कनेक्शन खत्म हो जाता है।'' गुरु साहब कहते हैं:

***हउ वेखि वेखि गुरू विगसिआ गुर सतिगुर देहा।।***

जहां वे प्रकट हैं, उनके दर्शनों की कोई महिमा ब्यान नहीं की जा सकती। जो सुख दर्शन करके आता है, उसे मुंह से नहीं कहा जा सकता। गुरु साहब कहते हैंः

*जो सुखु दरसनु पेखते पिआरे मुख ते कहणु न जाइ।*

मैं हमेशा बताया करता हूँ कि आप इस यात्रा को कभी न भूलें। गुरु–परमात्मा के आगे हमेशा फरियाद करें कि हमें फिर ऐसा मौका देते रहें। **जिन्हें रस आ जाता है**, उन्हें पता होता है।

एक बार की बात है कि अनुराग सागर की ट्रांसलेशन हो रही थी तो पप्पू को विचार आया कि सन्तों से महत्वपूर्ण बातें फिर से पूछी जाएँ। अगर केंट बिकनल दोबारा राजस्थान आएगा तो इसके काफी सारे पैसे खर्च हो जाएंगे। हमने आपस में बात की और मैंने कहा कि तुम उसे सलाह दे देना।

पप्पू ने केंट बिकनल को सलाह दी कि दोबारा राजस्थान आने में तुम्हारे काफी पैसे खर्च हो जाएंगे लेकिन केंट बिकनल ने जवाब दिया कि आश्रम में आने के लिए पश्चिम की संगत कुछ हजार रुपए खर्च करने की परवाह नहीं करती क्योंकि वे अपने गुरु के दर्शन करना चाहते हैं। केंट बिकनेल काफी पैसे खर्च करके गुरु के दर्शन करने आश्रम आया। उसके बाद पप्पू ने कभी भी किसी को सलाह नहीं दी कि तुम यहाँ मत आना।

अगर ग्रुप में जगह न हो तो कुछ कह नहीं सकते। **जिन्हें रस आ जाता है**, वे पैसे–टके की परवाह नहीं करते, चाहे उन्हें कितना भी क्यों न समझाएँ। मेरे पास ऐसे भी प्रेमियों के पत्र आते हैं जो हर महीने यहाँ आना चाहते हैं। वे मुंबई के ग्रुप में भी आना चाहते हैं लेकिन मैं किसी को यह इजाज़त नहीं देता, सिर्फ साल में एक बार आने की इजाज़त देता हूँ। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे:

*जिन्हां लग्गे प्रेम तमाचे घर दे कम्मों गईयाँ।*
*लैणा–देणा सब सुटेया खूह विच पईयाँ बहियाँ।।*

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से एक अनमोल वचन

# आदत

दुनिया में दो ताकतें काम करती हैं, एक काल मत है और दूसरी दयाल मत है। हिन्दु एक को गुरुमत और दूसरी को मनमत कहते हैं। मुसलमान एक को रहमानी और दूसरी को शैतानी कहते हैं।

गुरु नानक देव जी कहते हैं, ''हमारा राम चौथे पद में बैठा है, दुनिया के सारे जीव भी राम-राम ही करते हैं।'' पहले मैं भी ''*हे राम हे गोबिंद*''

का जाप किया करता था। मेरे अंदर इस जाप की आदत बनी हुई थी, यह जाप अपने आप ही चलता रहता था। किसी ने मुझे बताया कि राम-राम करते हुए आटे की गोलियां बनाकर मछलियों को खिलाने से पुण्य होगा। मैंने ऐसी क्रिया भी बहुत लगन से की है। गुरु साहब कहते हैंः

***राम राम सभु को कहै कहिऐ रामु न होइ।।***
***गुर परसादी रामु मनि वसै ता फलु पावै कोइ।।***

अगर हम सारा दिन मिश्री-मिश्री करते रहें लेकिन मिश्री न खाएं तो मुँह मीठा नहीं होता। हम सारे ही राम-राम कहते हैं लेकिन कहने से राम नहीं मिलते। पहले आप अपना बर्तन बनाएं फिर किसी महात्मा से मिलें,

महात्मा कृपा करें तो आप उनसे अपने बर्तन में वस्तु डलवा सकते हैं। तुलसी दास कहते हैं कि चोर, ठग और साधु भी राम–राम करते हैं लेकिन बिना प्यार के वे राम रीझते और मिलते नहीं। कबीर साहब कहते हैंः

***इक राम दशरथ का बेटा, एक राम घट घट में बैठा ।।***
***इक राम का सकल पसारा, इक राम इन्हीं से न्यारा।।***

एक राम, रामचन्द्र जी महाराज हुए हैं जो त्रेता युग में आए, उन्होंने हिन्दुस्तान में अच्छा शासन किया, वे बड़े न्यायकारी थे। हम आज भी उनके राम राज्य को याद करते हैं। आज भी कई नेता यह विश्वास दिलवाते हैं कि हम राम राज्य लाएंगे। राम राज्य में हर आदमी अपनी फरियाद खुले दिल से करता था। उनकी हिस्ट्री में आता है कि वे ब्रह्म के अवतार थे और वे कुत्ते तक की भी फरियाद सुनते थे।

भागवत में कथा आती है कि एक कुत्ते को किसी ने डंडा मारा, कुत्ते ने अपनी पूंछ से रस्सी को हिलाया। रामचन्द्र जी महाराज ने बाहर आकर कुत्ते से पूछा, ''कुत्ते तुझे क्या कष्ट है?'' कुत्ते ने कहा, ''मैंने इस आदमी का कुछ नहीं बिगाड़ा लेकिन इसने मुझे डंडा मारा है।'' रामचन्द्र जी ने कुत्ते से पूछा, ''इसे क्या सजा दें?'' कुत्ते ने कहा, ''आप इसे पुजारी बना दें ताकि यह भी लोगों का खाकर मेरी योनि में आ जाए।''

मुझे आपके चरणों में खड़े होकर यह ज्ञान है कि मैं पिछले जन्म में पुजारी था, मुझे लोगों का खाने की **आदत** पड़ी हुई थी, मैं इसे देखकर इसलिए उठा था कि यह मुझे खाने की लिए कुछ देगा क्योंकि **आदत** साथ ही जाती है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''आप जिसका खाते है उसका उतना काम कर दें।'' कबीर साहब कहते हैंः

***गिरही का टुक्कर बुरा, नौं नौं उंगल दाँत।***
***भजन करे तो उबरे, नहीं तो कढे आँत।।***

***

# धन्य अजायब

## पठानकोट में सतसंग का कार्यक्रम

14, 15 व 16 मार्च 2025

## 2025 में 16 पी.एस.आश्रम राजस्थान में सतसंगों के कार्यक्रम

1. 02, 03, 04, 05 व 06 अप्रैल
2. 07, 08, 09, 10, 11 व 12 सितम्बर
3. 03, 04 व 05 अक्टूबर
4. 31 अक्टूबर, 01 व 02 नवम्बर
5. 05, 06 व 07 दिसम्बर

RNI No - RAJHIN/2003/9899